''नरेन्द्र कोहली के नाटकों में प्रयोगशीलता''

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) की
पी–एच.डी. की उपाधि के लिए प्रस्तावित
शोधकार्य की रूपरेखा
2013

निर्देशिका :

डॉ0(श्रीमती) स्वामी प्यारी कौड़ा
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग

शोधार्थिनी :

प्रिया गाम्टा
एम.ए., एम.फिल्.

संकाय प्रमुख :

प्रो0उर्मिला आनंद

विभागाध्यक्ष :

प्रो0शर्मिला सक्सेना

<u>कला संकाय</u>
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा

नरेन्द्र कोहली के नाटकों में प्रयोगशीलता

भूमिका

कालजयी कथाकार एवं मनीषी डॉ0 नरेन्द्र कोहली की गणना आधुनिक हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ रचनाकारों में है। कोहली जी ने साहित्य की प्रमुख विधाओं (उपन्यास, नाटक, कहानी, व्यंग्य) एवं गौण विधाओं (संस्मरण, निबंध, पत्र आदि) और आलोचनात्मक साहित्य में अपनी लेखनी चलायी है। उन्होंने शताधिक श्रेष्ठ ग्रंथों का सृजन किया है।

नरेन्द्र कोहली मूलतः कथाकार है, किन्तु नाट्य साहित्य में भी एक विशेष दृष्टि लेकर अवतरित हुए हैं। उन्होंने अपने नाटकों में पौराणिक एवं ऐतिहासिक चरित्रों की गुत्थियों को सुलझाते हुए उनके माध्यम से आधुनिक समाज की समस्याओं एवं अनेक समाधानों को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। कोहली जी सांस्कृतिक, राष्ट्रवादी साहित्यकार हैं, उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय जीवन–शैली एवं दर्शन का सम्यक् परिचय करवाया है।

सिद्धहस्त नाटककार, उपन्यासकार कहानीकार और बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न नरेन्द्र कोहली का व्यक्तित्त्व सरल व सहज है। नरेन्द्र कोहली का जन्म 6 जनवरी 1940 को संयुक्त पंजाब के सियालकोट नगर में हुआ था, जो अब पाकिस्तान में है। कोहली जी की प्रारम्भिक शिक्षा लाहौर में आरम्भ हुई और भारत विभाजन के पश्चात् परिवार के जमशेदपुर चले आने पर वहीं आगे बढ़ी। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर और डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की, साथ ही हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक डॉ0 नगेन्द्र के निर्देशन में 'हिन्दी उपन्यास : सृजन एवं

सिद्धान्त' विषय पर शोधकार्य पूर्ण किया। सन् 1963 से 1995 तक कोहली जी ने दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। 1995 में पूर्णकालिक लेखन की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण किया। अपने लेखन के लिए नरेन्द्र कोहली को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है– शलाका सम्मान, पं0 दीनदयाल उपाध्याय सम्मान तथा हाल ही में उन्हें व्यास सम्मान से नवाजा गया है। हिन्दी साहित्य को वे अपनी कलम के माध्यम से महिमा मण्डित कर रहे हैं और आगे भी यह श्रृंखला वृद्धि करती रहेगी।

नाटक जीवन की अनुकृति है और जीवन स्वयं में एक प्रत्यक्ष नाट्यानुभूति। नाटक में बनता–ढलता जीवन का यह छोटा संस्करण रंगमंच के अनेक आयामों को स्पर्श करता हुआ मनुष्य जीवन को एक नई समझ प्रदान कर गहन विचार चेतना से आपूरित कर देता है। साहित्य की समस्त विधाओं में नाटक ही एकमात्र ऐसी विधा है जो पाठ्य और दृश्यगत दोनों आयामों में ढल कर अनुभूतियों को अधिक मार्मिक और अधिक संप्रेषणीय बनाने में समर्थ है। भारतेन्दु से उद्‌गमित नाट्य की अविरल धारा आज अपने उन्मुक्त रूप में वह रही है और नरेन्द्र कोहली जैसे नाटककार, कथाकार, इस धारा का उचित मार्ग प्रशस्त कर हिन्दी साहित्य की सेवा कर रहे हैं।

समसामयिक नाटककारों में नरेन्द्र कोहली अपने ज्वलन्त नाटकों के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने पौराणिक कथा व पौराणिक पात्रों को आधार बनाकर और उसमें नवीन प्रयोगों को सम्मिलित कर हमारे समक्ष नाटकों को प्रस्तुत किया है, जो सरल कार्य नहीं है। उनके नाटक परम्परा का निर्वाह करते हुए वर्तमान संदर्भों को लेकर नवीन प्रयोगों द्वारा कथानक को नया धरातल प्रदान करते हैं। अन्धकार, निराशा, भ्रष्टाचार एवं मूल्यहीनता के युग में नरेन्द्र कोहली ने ऐसे कालजयी पात्रों का चुनाव किया, जो भारतीय मनीषा के रोम–रोम में स्पंदित हैं। 'संघर्ष की ओर', 'किष्किंधा'

एवं 'अगस्त्य–कथा' आदि नाटकों में कोहली जी ने पौराणिक प्रसंगों की आधुनिक तर्कसम्मत व्याख्या ही नहीं प्रस्तुत की अपितु उनके भीतर अपने युग की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का वर्णन किया है। 'शम्बूक की हत्या', 'गारे की दीवार' आदि नाटकों में समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अनैतिकता, विसंगतियों व अनाचार को परत दर परत उनके नाटकों में खोला गया है। कोहली जी के नाटक पौराणिक, सामाजिक, राजनैतिक आयामों को लिए हुए हैं।

नरेन्द्र कोहली कई विषयों में सिद्धहस्त हैं। मानव मनोविज्ञान को वह समझते हैं एवं विभिन्न पात्रों–चरित्रों के मूल तत्त्व को पकड़कर भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में उनकी सहज प्रतिक्रिया को प्रभावशाली व विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत करते हैं। औसत और असाधारण सभी प्रकार के पात्रों को वे अपनी सहज–संवेदना एवं भेदक विश्लेषक शक्ति से न सिर्फ पकड़ लेते हैं, वरन् उनके साथ तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। राजनैतिक समीकरणों, घात–प्रतिघात, शक्ति सन्तुलन इत्यादि का व्यापक चित्रण उनके नाटकों में दर्शनीय है। भाषा, शैली, शिल्प एवं कथाकार के स्तर पर नरेन्द्र कोहली ने अनेक नए एवं सफल प्रयोग किये हैं, जिससे नाट्य विधा नया स्तर ग्रहण करती है। डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक ने कहा है कि ''डॉ0 नरेन्द्र कोहली का हिन्दी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान है। विगत तीस–पैंतीस वर्षों में उन्होंने जो लिखा है वह नया होने के साथ–साथ मिथकीय दृष्टि से एक नई जमीन तोड़ने जैसा है।.....कोहली ने व्यंग्य, नाटक, समीक्षा और कहानी के क्षेत्रों में भी अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया है। मानवीय संवेदना का पारखी नरेन्द्र कोहली वर्तमान युग का प्रतिभाशाली वरिष्ठ साहित्यकार है।''

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि नरेन्द्र कोहली ने अपने नाटकों में पौराणिक आख्यानों को वर्तमान धरातल पर बड़ी सूझ–बूझ के साथ उतारा है। मिथकीय वस्तु

का चुनाव एवं प्रतीकात्मक चरित्र–योजना का चयन नाटकों को जीवतंता प्रदान कर आधुनिक सन्दर्भों से परिचित कराता है, नरेन्द्र कोहली की यह बड़ी उपलब्धि है। 'वर्तमान समस्याओं को काल प्रवाह के मझधार से निकालकर मानव समाज की शाश्वत समस्याओं के रूप में उन पर सार्थक चिन्तन' प्रस्तुति उन्हें पूर्ववर्ती सभी साहित्यकारों से उच्चतर धरातल पर खड़ा कर देती है। उनके जैसी प्रयोगशीलता, विविधता और प्रखरता कहीं और देखने को नहीं मिलती। नरेन्द्र कोहली की जीवन यात्रा व उनकी सृजनशीलता के विषय में वर्णन करते हुए उनके द्वारा रचित साहित्य पर हुए पूर्ववर्ती शोधकार्यों पर प्रकाश डालना भी मेरे शोध प्रबन्ध का विषय होगा। मैंने अपनी विहंगम दृष्टि से देखा व समझा है कि 'नरेन्द्र कोहली के नाटकों में प्रयोगशीलता' विषय पर अभी तक कोई शोधकार्य सम्पन्न नहीं हुआ है। अतः इस विषय को आधार बनाकर मैं अपना शोधकार्य आरम्भ करने जा रही हूँ। मेरा यह शोधकार्य पूर्णरूपेण मौलिक तथा सुधी पाठकों के लिए लाभकारी सिद्ध होगा, ऐसी अभिलाषा है।

नरेन्द्र कोहली के नाटकों में प्रयोगशीलता

रूपरेखा

प्रथम अध्याय – (क) नरेन्द्र कोहली का जीवन परिचय एवं साहित्यिक परिचय

(ख) नरेन्द्र कोहली की सृजनशीलता से संबंधित पूर्ववती शोधकार्य

(ग) मिथक का अर्थ, स्वरूप एवं अवधारणा

द्वितीय अध्याय – नरेन्द्र कोहली के नाटकों का परिचयात्मक विवरण

(क) मूल प्रेरणा

(ख) पारिवारिक जीवन

(ग) प्रेम एवं विसंगति

(घ) नारी की स्थिति

(ड़) शासन और सत्ता के प्रति विद्रोही स्वर

तृतीय अध्याय – नरेन्द्र कोहली के नाटकों का वस्तुगत वैशिष्ट्य

(क) कथ्य संबंधी मिथकीय चेतना और प्रयोगशीलता –

- पौराणिक कथाओं का चुनाव
- इतिहास एवं कल्पना का मिश्रण
- समकालीन संदर्भो से जुड़ाव

(ख) चरित्र संबंधी मिथकीय चेतना और प्रयोगशीलता –

- चरित्र संबंधी अवधारणा, स्वरूप एवं संयोजन
- विशिष्ट चरित्रों का समविषम संबंध
- सामान्य पात्रों का परस्पर संबंध
- मिथक पात्रों का प्रयोग

चतुर्थ अध्याय – नरेन्द्र कोहली के नाटकों का शिल्पगत वैशिष्ट्य

(क) संवाद योजना–

- संवाद की अवधारणा
- संवाद की कोटियाँ– पात्रानुकूल संवाद, लघु एवं दीर्घ संवाद, व्यंग्यात्मक संवाद, गतिशील संवाद, प्रश्नवाचक संवाद, पूर्व दीप्ति शैली युक्त संवाद आदि।

(ख) नाट्य भाषा –

- प्रतीक एवं बिम्ब युक्त भाषा
- मिथकीय चेतना युक्त भाषा
- प्रवाहमयी एवं लययुक्त भाषा
- मुहावरें, कहावतें एवं लोकोक्तियों का प्रयोग
- शब्दों में नवीन अर्थ योजना

(ग) रंगमंच सज्जा एवं अभिनेयता –

- दृश्य विधान
- रंग संकेत ध्वनि, प्रकाश व्यवस्था
- रंगशाला की स्थिति (मंच व्यवस्था)
- पात्रों की अभिनय शैली
- वेशभूषा और प्रसाधन

उपसंहार

परिशिष्ट–

सृजनात्मक साहित्य से संबंधित आधार ग्रन्थ

सृजनात्मक साहित्य से संबंधित संदर्भ ग्रन्थ

पत्र–पत्रिकाओं की सूची

कोश ग्रन्थों की सूची

सृजनात्मक साहित्य से संबंधित आधार ग्रंथ

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
(1)	हत्यारे	नरेन्द्र कोहली	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली,32	1999
(2)	शम्बूक की हत्या	नरेन्द्र कोहली	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली,32	1999
(3)	गारे की दीवार	नरेन्द्र कोहली	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली,32	1999
(4)	किष्किंधा	नरेन्द्र कोहली	अभिरूचि प्रकाशन, दिल्ली, 32	1998
(5)	अगस्त्य –कथा	नरेन्द्र कोहली	अभिरूचि प्रकाशन, दिल्ली, 32	1998
(6)	निर्णय रूका हुआ	नरेन्द्र कोहली	पुस्तकायन,नई दिल्ली,110002	1990
(7)	संघर्ष की ओर	नरेन्द्र कोहली	अभिरूचि प्रकाशन, दिल्ली, 32	1998
(8)	नींद आने तक	नरेन्द्र कोहली	पुस्तकायन,नई दिल्ली,110002	1990
(9)	प्रतिद्वंद्वी	नरेन्द्र कोहली	पुस्तकायन,नई दिल्ली,110002	1990

सृजनात्मक साहित्य से संबंधित संदर्भ ग्रंथ

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
(1)	हिन्दी नाटक इतिहास दृष्टि और समकालीन बोध	डॉ0 प्रभात शर्मा	संजय प्रकाशन, दिल्ली	2006
(2)	हिन्दी नाटक के सौ वर्ष	डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी	गिरनार प्रकाशन, महेसाना, गुजरात	1990
(3)	प्रसाद साहित्य में अतीत–चिन्तन : वर्तमान के परिपेक्ष्य में	डॉ0 धर्मपाल कपूर	निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली	1998
(4)	अर्वाचीन हिन्दी नाट्य विधा	डॉ0 कीर्ति शर्मा	सत्यम् पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली	2009
(5)	प्रसाद का नाट्य साहित्यः परम्परा एवं प्रयोग	हरीन्द्र	निर्मल पब्लिकेशन्स,दिल्ली	2000
(6)	समसामयिक नाटकों में वर्ग चेतना	डॉ0देव किशन चौहान	स्वराज प्रकाशन, रोहिणी, दिल्ली	1997
(7)	दसवें दशक के हिन्दी नाटकःसंवेदना एवं शिल्प	डॉ0निधि गुप्ता	प्रशस्ति प्रकाशन , दिल्ली	2005
(8)	हिन्दी नाट्य प्रयोग के संदर्भ में	डॉ0 सुषम बेदी	पराग प्रकाशन दिल्ली	1984
(9)	हिन्दी नाट्य परम्परा और प्रयोग	डॉ0 सुधीन्द्र कुमार	संजय प्रकाशन, दिल्ली	1998
(10)	आधुनिक हिन्दी नाटकों में नायक एवं नायिका की परिकल्पना	डॉ0 मलखान सिंह सिसौदिया	प्रगति प्रकाशन, दिल्ली	1978
(11)	आज का हिन्दी नाट्यःप्रगति और प्रभाव	डॉ0 देवेन्द्र स्वामी	भावना प्रकाशन, दिल्ली	2006
(12)	आधुनिक हिन्दी नाटक	डॉ0 बनवीर प्रसाद शर्मा	अनंग प्रकाशन, दिल्ली	2001
(13)	आज के हिन्दी रंग – नाटक : परिवेश और परिदृश्य	जयदेव तनेजा	तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली	1995
(14)	आधुनिक हिन्दी नाटक	डॉ0 नगेन्द्र	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1998
(15)	आधुनिक हिन्दी नाटक : एक यात्रा दशक	डॉ0 नरनारायण राय	भारती भाषा प्रकाशन, दिल्ली	1979

(16)	नई रंग – चेतना और हिन्दी नाटक	जयदेव तनेजा	तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली	1994
(17)	प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन	डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा जैन	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1997
(18)	प्रसाद : नाट्य और रंगशिल्प	डॉ0 गोविन्द चातक	आत्माराम सन्स, दिल्ली	1970
(19)	प्रसाद युग के नाटकों की शिल्प – विधि	डॉ0 शान्ति मलिक	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1996
(20)	आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच	राधाबल्लभ त्रिपाठी	प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली	1998

पत्र–पत्रिकाएँ

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
1	नटरंग	नेमिचन्द्र जैन	नई दिल्ली	अप्रैल–सितंबर 1969
2	आलोचना	सं. नामवर सिंह	राजकमल प्रकाशन	जनवरी–मार्च 2010
3	रंग प्रसंग	सं. प्रयाग शुक्ल	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय	2009
4	समावर्तन	रमेश दवे	उज्जैन	मार्च 2009
5	आजकल	सं. सीमा ओझा	नई दिल्ली	सितम्बर 2009

कोश ग्रन्थ

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
1	भारतीय रंगकोश, हिन्दी, खण्ड–2	प्रतिभा अग्रवाल	राजकमल प्रकाशन	2006
2	हिन्दी साहित्य कोश भाग–1	धीरेन्द्र वर्मा	ज्ञानमंडल वाराणसी	सं. 2015 वि.
3	नालन्दा विशाल शब्द सागर	श्रीनवल	ला. फूलचन्द जैन, नई दिल्ली	2007
4	भाषा शब्द कोश	रमाशंकर शुक्ल रसाल	रामनारायणलाल बेनीप्रसाद इलाहाबाद	1971